LOK SABHA

Tuesday, May 2, 1972/Vaisakha 12, 1894 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

OBITUARY REFERENCE

MR. SPEAKER : I have to inform the House of the sad and untimely demise of Shri Kamalnayan Bajaj who passed away at Ahmedabad on the last May 1972 at the age of 57.

Shri Bajaj was a member of Second, Third and Fourth Lok Sabha during the years 1957-70 representing Wardha constituency. A distinguished son of an illustrious father, Seth Jamnalal Bajaj, his early period was spent under the guidance and inspiration of Gandhiji and other freedom fighters. Those of us who sat with him in this House know how quiet, gentle and affable he was. An able parliamentarian, he used to take active part in the proceedings of the House, particularly on educational, culture and industrial problems. He had suffered imprisonment for participating in the freedom struggle and had also helped the freedom movement in various ways. Coming of a noted industrialist family he was a philanthropist and was associated with a number of social and educational institutions.

We deeply mourn the loss of this friend and I am sure the House will join me in conveying our condolences to the bereaved family.

THE PRIME MINISTER, MINISTER OF ATOMIC ENERGY, MINISTER OF ELECTRONICS, MINISTER OF HOME AFFAIRS AND MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : Sir, we share the sentiments which you have expressed. The news of Shri Kamalnayan Bajaj's sudden death has come as a great shock to us all.

My family came in close contact with his father, Seth Jamnalal Bajaj, through Mahatma Gandhi in the early twenties. Since then I have known Kamalnayanji as well as other members of his family. For some time, we were at the same school in bombay.

Kamalnayanji took a prominent part in the nationalist movement even in his student years and had a deep interest in politics. In post-independent India, following in his father's footsteps, he held positions in the Congress Party. At the same time, through his astuteness and acumen he rose in the world of business. He was connected with many organisations and had a large number of friends all over India and abroad.

A familiar figure has departed from our public life and he will be greatly missed. Would you please convey our deep sorrow, sympathy and condolences to all members of the bereaved family ? May I say a special word for his old mother Shrimati Janki Devi for whom this must be an especially grievous blow ?

SHRI DINEN BHATTACHARYYA (Serampore) : I share the sentiments expressed by you and the Leader of the House and request you to convey our sorrow and condolences to the bereaved family of the late Shri Kamalnayan Bajaj.

श्री जगन्नाथराव जोशी (शाजापुर) : अध्यक्ष महोदय, कल जब श्री कमलनयन बजाज जी के असामयिक निधन का समाचार सुनने को मिला तो बड़ा धक्का-सा लगा । चौथी लोक सभा में मैं भी था इसलिये उनको नजदीक से जानने का मुझको मौका मिला था । कुछ समय जब मैं फीरोजशाह रोड पर रहता था, तो हम पड़ौसी भी थे । स्वभाव से बड़े विनम्र और सादगी के तो मानों आदर्श ही थे । उनके असामयिक निधन से राजनीतिक क्षेत्र की एक बड़ी क्षति हुई है । आप ने और सदन ने जो भावना प्रकट की है, उसके साथ मैं अपनी और अपने दल की भावना

भी प्रकट करता हूँ और अनुरोध करता हूँ कि उनके शोक सतप्त परिवार को हमारी समवेदना पहुँचा दी जाय।

श्री एस० एम० बनर्जी (कानपुर) : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय जमनालाल जी बजाज के सुपुत्र श्री कमलनयन बजाज इस सदन के सदस्य काफी समय से थे। जिस तरह से मेरे साथ उनकी जान-पहचान थी—चाहे उनका राजनीतिक दृष्टिकोण कुछ दूसरा था, जिससे मैं कभी सहमत नहीं हो सका, या मेरा दल कभी सहमति नहीं दे सका, लेकिन फिर भी उनका जाती व्यवहार इतना अच्छा था कि कभी-कभी हम अपने मतभेदों को भी भूल जाया करते थे। मैं समझता हूँ कि आज उनके निधन से कुछ क्षति जरूर हुई है और मैं चाहता हूँ कि मेरी और मेरे दल की तरफ से सहानुभूति और हार्दिक शोक उनके परिवार तक पहुँचा दिया जाय।

श्री श्यामनन्दन मिश्र (बेगूसराय) : अध्यक्ष महोदय, कल जब यह दुखद समाचार हम लोगों को मिला कि श्री कमलनयन जी बजाज अब हमारे बीच नहीं रहे तो हम बड़े मर्माहत हुए और ऐसा लगा कि राजनीति, समाज सेवा और उद्योग के क्षेत्र से एक विशेष व्यक्तित्व का अवसान हो गया है। कमलनयन जी जीवन-संघर्ष में तो सिर्फ 57 सालों तक जूझते रहे, लेकिन वे जिस शैली में जूझे, वह शैली बराबर सलामत रहेगी। उनके व्यक्तित्व में एक विलक्षण सरलता सादगी और सन्तुलन था। उन्होंने कठिन से कठिन समय में भी अपने विनोद या सन्तुलन को नहीं खोया। राजनीति में दृढ़ आस्था और संकल्प के साथ रहे और उद्योग से भी उन्होंने अपने परिवार के अनुरूप सफलता पाई।

स्वतन्त्रता संग्राम में उनके परिवार का जो स्थान रहा, उससे शायद ही कोई स्वतन्त्रता संग्राम का सेनानी अनभिज्ञ हो और यह सबों की राय होगी कि स्वतन्त्रता संग्राम में उनके परिवार का इतिहास सदैव के लिये सुरक्षित रहेगा।

वे बड़े आदर्शों के व्यक्ति थे। कितना जीवन में उतार पाये, उसके बारे में उन्होंने खुद तो लिखा है—"मैंने बहुत नहीं उतारा है।" लेकिन उनका ऐसा कहना शायद उनकी विनम्रता का द्योतक है। अभी हाल में उन्होंने एक पुस्तक लिखी जो उन्होंने मुझे भी दी थी। उस पुस्तक का नाम है—'काकाजी—बापू—विनोबा।" उस पर उन्होंने एक वाक्य लिख दिया था, जिसका मेरे जीवन पर बड़ा असर रहेगा। उन्होंने लिखा था—

"प्रिय भाई मिश्र जी,

दूर जाना तो सीखा है, नजदीक आना इस से सीखो।" यानी इस पुस्तक से सीखो। उन्होंने इन तीनों बड़े आदर्शों को, जिन आदर्शों के मूर्तिमान रूप बापू, विनोबा और जमनालाल जी थे, इन तीनों आदर्शों को अपने जीवन में बराबर लाने की कोशिश की। उन्होंने लिखा है— "काकाजी के व्यापार में दान था, हमारे दान में व्यापार है।" 'बापू राम-नाम लेते थे कि उसको भूल न जाएं, हम भूले से राम-नाम लेते है।" "विनोबा की प्रज्ञा स्थिर है, काया चंचल, हमारी काया स्थिर है प्रज्ञा चंचल।" वे इन तीन आदर्शों को अपने जीवन में उतारना चाहते थे और मैं समझता हूँ कि इसी लिये उनका जीवन कई मामलों में विशिष्ट गुणों से विभूषित था, वे भले ही उनका प्रदर्शन न करते हों।

हम सभी आज उनके गुजर जाने से हृदय से दुखी है और हम जब इसकी कल्पना करते है कि वे अपनी बहिन के घर से रुखसत हुए तो उस बहन के प्रति भी हमारी संवेदना का भाव जाता है। एक बहिन का अपने भाई से इस तरह से वियुक्त हो जाये यह एक बड़ी दुखद बात होती है। इसलिये आज हम सबों के हृदय उस बहिन के साथ भी हैं और उस सारे परिवार के साथ है। हम समझते है कि हम एक बड़ी बिरादरी के सदस्य है और यह आत्मीयता की भावना हम सबों में बराबर उस परिवार के साथ बराबर रहेगी। आपने, प्रधान मंत्री जी ने या हमारे अन्य भाइयों ने जिन भावनाओं को व्यक्त किया है वे भावनाएं हम सबों की है लेकिन मैं आपसे यह भी अनुरोध करूंगा कि आप जब उनके परिवार के पास इन भावनाओं को भेजें तो श्री कमलनयन बजाज की बहिन के पास भी एक खास संवेदना सूचक कोई पत्र भेजें।

SHRI G. VISWANATHAN (Wandiwash) : In the demise of Mr. Kamalnayan Bajaj we have lost not only a leading industrialist and philanthropist but also a freedom fighter and a close associate of Gandhiji. On behalf of our party we request you to convey our condolences to the bereaved family.

श्री भागीरथ भंवर (झाबुआ) : अध्यक्ष महोदय, सदन में जो विचार व्यक्त किए गए हैं उससे मैं सहमति प्रकट करता हूँ। बजाज जी का इतिहास इस देश के विषय में जो कुछ भी है वह सर्वविदित है। बजाज जी ने विशेषकर गांधीजी से प्रेरणा लेकर के इस देश की आजादी के आन्दोलन में एक सक्रिय सहयोग किया। धीरे-धीरे इस देश में गांधी जी के चेलों और सहयोगियों का अभाव होता जा रहा है जिससे काफी दुख हो रहा है। मैं चाहता हूँ कि बजाज जी ने इस देश के लिए जो कुछ भी कामनायें शेष रखी हैं उनके विचारों से प्रभावित हो करके हम भी कुछ कर सकें। साथ ही उनकी स्वर्गीय आत्मा के प्रति अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और दुखी परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

PROF. S. L. SAKSENA (Maharajganj) : Mr. Speaker, I had the privilege of knowing Shri Kamalnayan Bajaj from childhood. At the age of eighteen he was arrested in the freedom movement and we were together in the Hardoi jail. He was a boy of eighteen and he was put in a solitary cell. We were together there for about three months ; thereafter we remained friends all our life.

In 1942 on 14th July I was in Wardha when the Quit India Resolution was passed in the Congress Working Committee. His mother Shrimati Janaki Devi was there ; so was he and Bapuji was drafting the resolution on that day. A scorpion stung me that day, and all night I was nursed by his mother and him. He was a gentle and amiable person. He was a big industrialist with a big mill in the heart of my State and was a great philanthropist, but not the least proud of his richness or property. He was very generous in aiding the poor.

When I learnt of his death in the morning papers today I was greatly shocked. I only wish that he had lived long. He was young and serving the country. I wish to associate myself with the sentiments expressed in the House and request you to send our condolences to his mother and sister.

SHRI PILOO MODY (Godhra) : Sir, I would like to associate myself and my party with the sentiments expressed in the House. Mr. Bajaj, apart from being a colleague of ours in Parliament in the last Lok Sabha, has been a personal friend of mine for some years. I have always enjoyed the banter we used to constantly indulge in, never agreeing on any subject at all. I must admit that in all the moments we have had together, there was always considerable laughter and give and take. Therefore, I would like to associate myself with all that has been said about him. We know that he and his family have played a very useful role in the liberation struggle of our country. I would like you on my behalf and on behalf of my party to convey to his famliy our sincere sorrow at his very inopportune passing away.

SHRIMATI M. GODFREY (Nominated-Anglo-Indians) : Mr. Speaker, Sir, I would like to associate myself with all the sentiments expressed by the Leader of the House and others in the House. I would like you to convey to the bereaved family our heart-felt condolences at the sudden demise of Mr. Bajaj.

श्री शिवकुमार शास्त्री (अलीगढ़) : अध्यक्ष जी, पिछली लोकसभा में चार वर्ष तक इस सभा में श्री बजाज के साथ बैठने का अवसर प्राप्त हुआ और दो एक बार—विशेष समारोहों में भी एक दो दिन तक उनके साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। जैसा कि आपने और इस सदन की नेता ने विचार व्यक्त किए हैं, सरलता और विनोद-प्रियता यह दोनों गुण उनमें एक विशेष आकर्षण थे जिससे उनके समीप आने वाले व्यक्ति की इच्छा होती थी उनके पास ही रहे। मैं आपकी भावनाओं से और सदन की नेता की भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उनके भौतिक शरीर को अग्नि को भेंट करते हुए उनके गुणों में से कुछ गुण अपने जीवन के लिए चुनें और हम भी उसी प्रकार के बनें।

MR. SPEAKER : We will stand in silence for a while to express our sorrow.

The Members then stood in silence for a short while.

MR. SPEAKER : Before we take up Questions, I would like to inform the House that there will be no lunch hour on Wednesday and Thursday. Of course there will be lunch hour today. Next week, on Tuesday and Wednesday there will be no lunch hour.

Now, we will take up Questions.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Percentage of Missing Coal Wagons

*646. SHRI ANNASAHEB GOTKHINDE : Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state :

(a) whether the percentage of missing coal wagons to the total number of wagons booked continues to be high on the Railways, even after the introduction of the new procedure of machine linking since August, 1966 ; and

(b) if so, the reasons therefor ?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI K. HANUMANTHAIYA) : (a) Yes Sir.

(b) (1) Inaccurate and incomplete preparation of initial documents.

(2) diversions and interceptions of coal wagons, and

(3) errors in coding and punching of documents.

SHRI ANNASAHEB GOTKHINDE : The position is quite different from what the hon. Minister has stated. Some six years ago it was stated that there was heavy incidence of missing and unconnected coal wagons and it was stated before the Public Accounts Committee that the position was expected to improve with the introduction of the new procedure of machine linking. Even though that procedure was introduced in 1966, still there is no improvement. The position continues to remain the same. May I know what was the amount of expenditure incurred for the introduction of the mechanised procedure and what was the number of missing and unconnected coal wagons ?

MR. SPEAKER : Substitute for the missing link.

SHRI K. HANUMANTHAIYA : The hon Member has said that the position remains the same. With my knowledge I may say that it has worsened during the last seven years. The deterioration on this side is startling I am very happy that the hon. Member has taken interest in this subject and put a question. The percentage of missing wagons has gone upto 31 per cent on some Railways. There is alarming deterioration in this aspect of railway administration. We are taking various steps for the last two or three months. I have appointed two work-study teams to trace the missing wagons and to rectify the procedure to see that such missings do not take place. I had also appointed through the Financial Commissioner another study Team for coal accounting system and that report is ready. Only today we discussed this subject in the Board and have decided to appoint a sub-committee with the Deputy Minister as the Chairman and the concerned members of the Railway Board as members to go into the whole matter expeditiously and make recommendations so that they can be implemented and the deficiencies remedied.

SHRI ANNASAHEB GOTKHINDE : My particular question has not been answered. What is the expenditure that was incurred for the introduction of the mechanised procedure, which was intended to obviate these difficulties ? Secondly, what was the cost of the coal that was transported through these missing and unconnected coal wagons ?

SHRI K. HANUMANTHAIYA : I have not with me the information about the exact amount of money involved for the hire of the computers. It is not really question of missing wagons as such. It is a question of mis-directions or mis-delivery and not being able to verify the despatch and receipts.

श्री हुकम चन्द कछवाय : मैं जानना चाहता हूँ कि ये जो मिसिंग डिब्बे हुए हैं ये किसी की गलती के कारण हुए हैं, और जिन व्यक्तियों के